मेट्रो

निकोलाई नोसोव

चित्र: आई. सेम्योनोव, हिंदी: अरविन्द गुप्ता

मम्मी, वोव्का और मैं मॉस्को में आंटी ओल्गा से मिलने गए. पहले दिन ही मम्मी और आंटी ओल्गा शॉपिंग करने चली गईं और मुझे और वोव्का को घर पर छोड़ गईं. उन्होंने हमें देखने के लिए एक पुराना फोटो एलबम दिया. हमने उसे काफी समय तक देखते रहे, फिर हम उससे ऊब गए.

"अगर हम इस तरह घर पर रहें तो हम कभी भी मास्को नहीं देख पाएंगे," वोव्का ने कहा.

हमने खिड़की से बाहर देखा. घर के बाहर ही मेट्रो स्टेशन था.

“चलो मेट्रो में घूमने चलते हैं,” मैंने कहा.

हम स्टेशन पहुंचे. फिर हमनें टिकट खरीदे और एक ट्रेन में चढ़ गये. पहले तो हम थोड़ा डरे हुए थे, लेकिन कुछ देर बाद हम ट्रेन का आनंद लेने लगे. हमने दो स्टेशन पार किए और फिर ट्रेन से उतरे.

हमने सोचा, "हम बस इस स्टेशन को देखेंगे, फिर वापस लौट जाएंगे."

फिर हमने नए स्टेशन के चारों ओर देखना शुरू किया. अचानक हमें एक चलती हुई सीढ़ी दिखी, जिस पर लोग ऊपर-नीचे आ-जा रहे थे. फिर हमने भी उसपर ऊपर-नीचे सवारी की. आपको उसपर चलने की ज़रूरत नहीं पड़ती थी, क्योंकि सीढ़ी खुद अपने आप चलती थी.

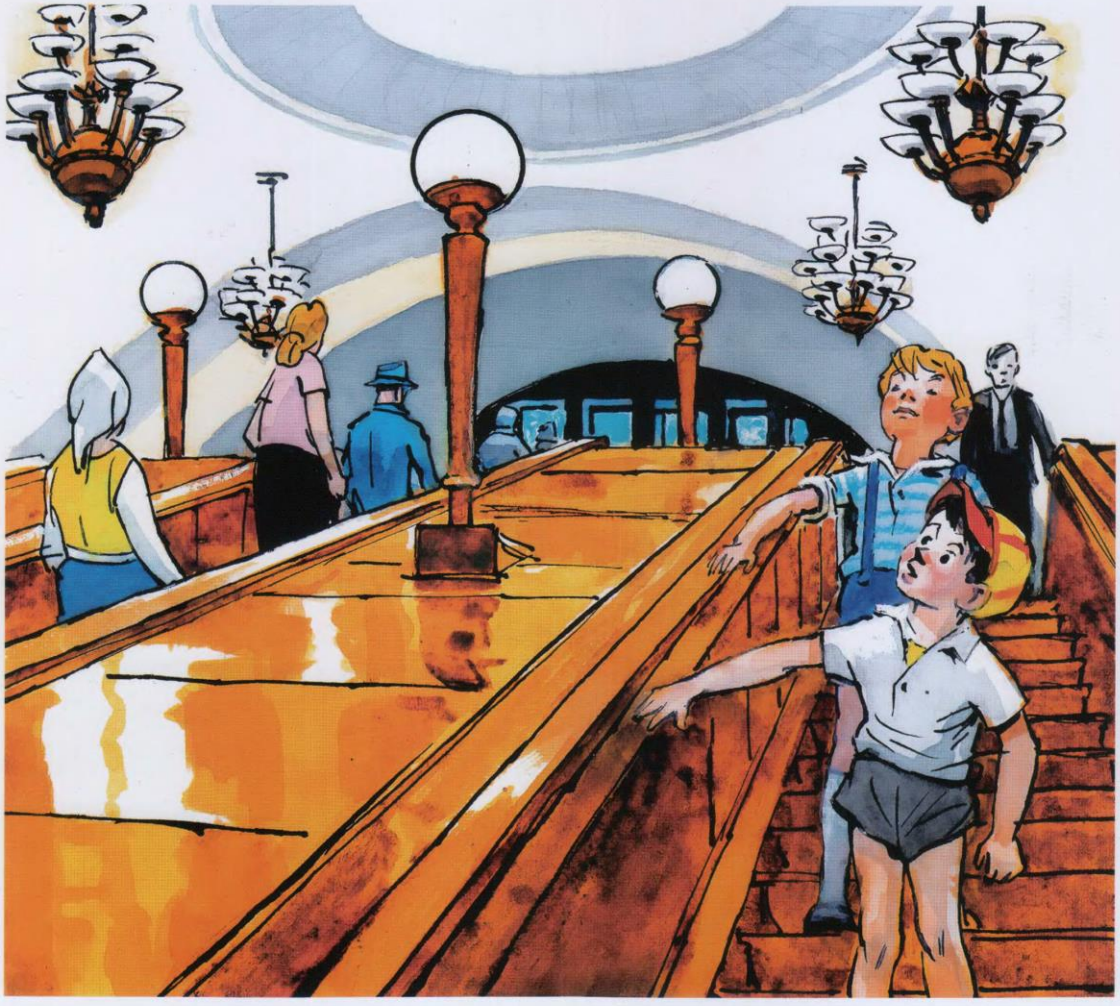

जब हमारा ऊपर-नीचे चढ़ने वाली सीढ़ी से मन भर गया तो फिर हम विपरीत दिशा वाली ट्रेन में चढ़ गए.

हमने दो स्टेशन पार किए और फिर बाहर निकले, लेकिन वो हमारा स्टेशन नहीं था!

वोव्का ने कहा, "हम गलत रास्ते से आए होंगे."

इसलिए हम दूसरी ट्रेन में चढ़ गए और वापस गए. लेकिन जब हम बाहर निकले तो वह भी हमारा स्टेशन नहीं था. उसके बाद हम डर गये.

"हमें किसी से पूछना चाहिए," वोव्का ने कहा.

"हम कैसे पूंछें? क्या तुम्हें उस स्टेशन का नाम पता जहाँ हम चढ़े थे?"

"नहीं, क्या तुम्हें मालूम है?"

"नहीं, मुझे भी नहीं पता."

“तो चलो फिर सभी स्टेशनों के चक्कर लगाते हैं. शायद हम इस तरह अपना स्टेशन ढूंढ पाएंगे," वोव्का ने सलाह दी.

इसलिए हम बाकी स्टेशनों के चक्कर लगाने लगे.

हम तब तक इधर-उधर घूमते रहे, जब तक हमें चक्कर नहीं आ गया.

फिर वोव्का रोने लगा.

"चलो बाहर निकलते हैं!"

"हम कहाँ जाएं?"

"कोई फर्क नहीं पड़ता कि हम कहाँ जाते हैं. मुझे कुछ ताज़ी हवा चाहिए.”

“और तुम वहाँ पर क्या करोगे?”

"मुझे जमीन के इतने नीचे रहना पसंद नहीं है."

फिर वोव्का चिल्लाने लगा.

"मत रोओ," मैंने कहा. "नहीं तो कोई तुम्हें पुलिस स्टेशन ले जाएगा."

"मुझे उसकी कोई परवाह नहीं है!!”

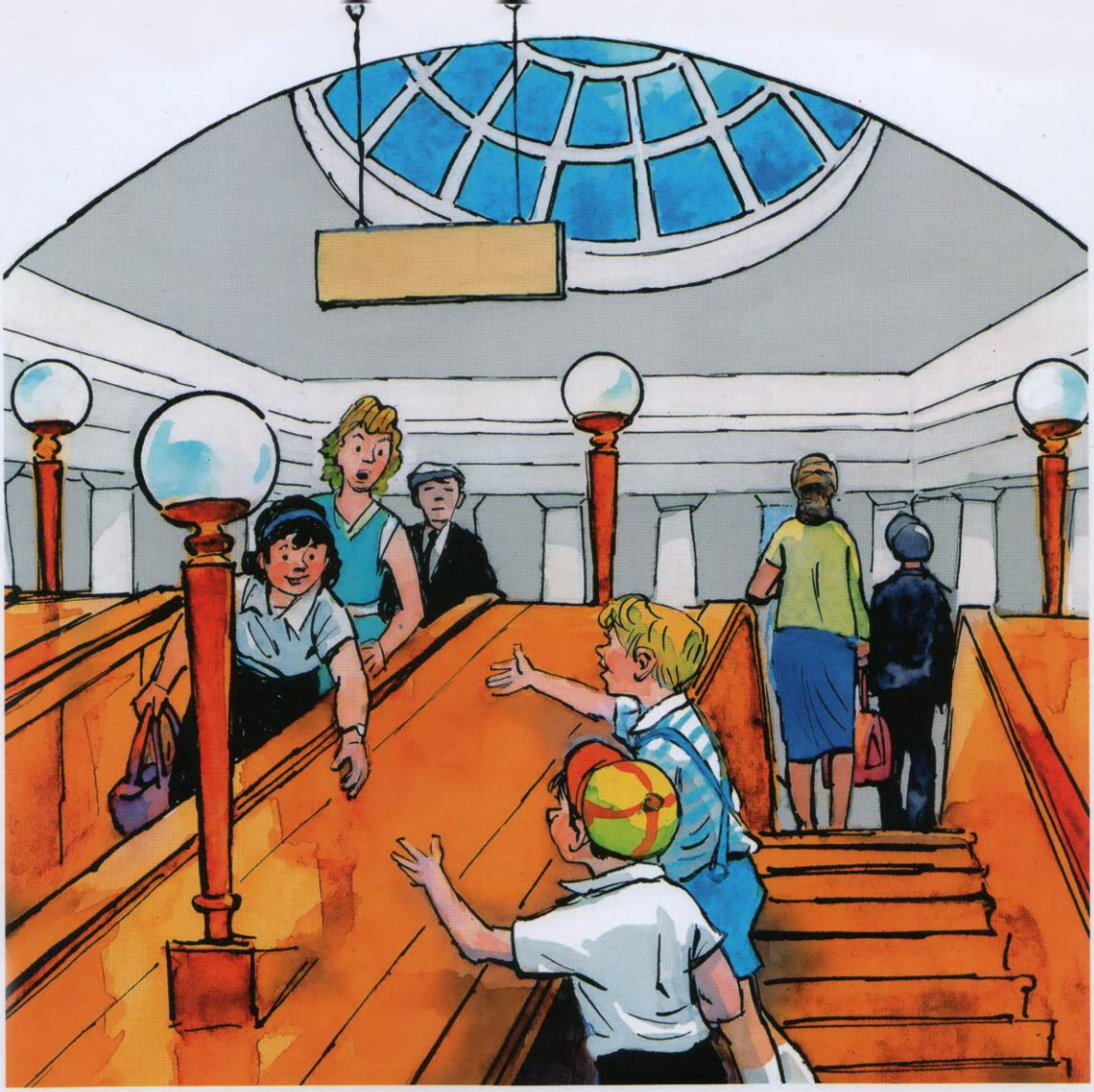

"ओह, ठीक है, चलो," मैंने कहा. “बस रोओ मत. देखो वहां एक पुलिसवाला हमें देख रहा है.

मैंने उसका हाथ पकड़ा, उसे चलती हुई सीढ़ी पर चढ़ाया और हम ऊपर गए.

"मुझे आश्चर्य था कि वो सीढ़ी हमें कहाँ ले जाएगी," मैंने सोचा. “अब हमारा क्या होगा?”

अचानक हमने मम्मी और आंटी ओल्गा को सामने वाली चलती सीढ़ी से नीचे जाते हुए देखा.

"माँ!" मैं पूरी ताकत से चिल्लाया.

उन्होंने हमें देखा और पुकारा:

"तुम यहां पर क्या कर रहे हो?"

"हमें यहाँ से बाहर जाने का रास्ता नहीं पता है!" हम जवाब में चिल्लाए.

इससे पहले कि हमारे पास कुछ और चिल्लाने का समय होता, सीढ़ियाँ हमें ऊपर ले गईं और मम्मी और आंटी ओल्गा नीचे चली गईं. फिर हम ऊपर पहुँचे और तेजी से नीचे जाने वाली सीढ़ियों पर चढ़ गए, जहाँ मम्मी ओर आंटी गई थीं.

अचानक हमने उन्हें अपनी ओर आते हुए देखा.

"तुम लोग कहां जा रहे हो?" उन्होंने पूछा. "तुम लोगों ने ऊपर हमारा इंतजार क्यों नहीं किया?"

"हम आपका पीछा कर रहे थे!"

जब हम नीचे पहुँचे, तो मैंने वोव्का से कहा:

"चलो इंतजार करते हैं. मम्मी और आंटी ओल्गा एक मिनट में नीचे आ जायेंगी."

हमने सदियों तक इंतज़ार किया, लेकिन उनका कोई पता नहीं चला.

"वे ऊपर हमारा इंतजार कर रही होंगी." वोव्का ने कहा, "चलो ऊपर चलें."

जैसे ही हमने ऊपर जाना शुरू किया, हमने उन्हें फिर से नीचे आते हुए देखा.

"हम आपका इंतज़ार करते-करते थक गए!" मम्मी और आंटी चिल्लाईं.

हमारे आस-पास हर कोई हंस रहा था.

हम ऊपर पहुँचे, फिर तेज़ी से नीचे उतरे. इस बार आख़िरकार हमने उन्हें ढूंढ ही लिया.

बिना पूछे बाहर जाने और ट्रेन में घूमने के लिए मम्मी हमें डांटने लगीं. फिर हमने उन्हें बताया कि हम कैसे अपना स्टेशन भूल गए थे.

"मुझे समझ नहीं आता कि तुम अपना स्टेशन कैसे भूल गए!" आंटी ओल्गा ने कहा. “मैं हर दिन मेट्रो में यात्रा करती हूं और मैंने कभी भी अपना स्टेशन नहीं भूलती हूं. तो चलो अब, घर चलें.”

हम फिर ट्रेन में चढ़े और कुछ देर बाद उतरे.

"तुम दोनों एकदम बेवकूफ हो," आंटी ओल्गा ने कहा, “तुम लोग अपने दस्ताने खोजोगे जबकि वो तुम्हारी बेल्ट में बंधे होंगे. यदि तुम सावधान नहीं रहोगे तो तुम अपने चेहरे की नाक भी खो दोगे."

रास्ते भर वो हमें इसी तरह चिढ़ाती रहीं.

जब हम स्टेशन पहुंचे तो आंटी ने कहा:

"देखो, मुझ से कुछ गलती हो गई है! तुम लोगों ने मुझे काफी भ्रमित किया है! हमें आर्बट स्टेशन जाना था, लेकिन यह तो कुर्स्क स्टेशन है. हम गलत स्टेशन पर आ गये हैं.”

फिर हम दूसरी ट्रेन में चढ़े और दूसरी ट्रेन लाइन से वापस गए.
इस बार आंटी ने हमें नहीं छेड़ा और हमें बेवकूफ नहीं बुलाया.

Nikolay Nosov

METRO

Translated by Jim Riordan,
K. M. Cook-Horujy
Illustrated by I.Semyonov

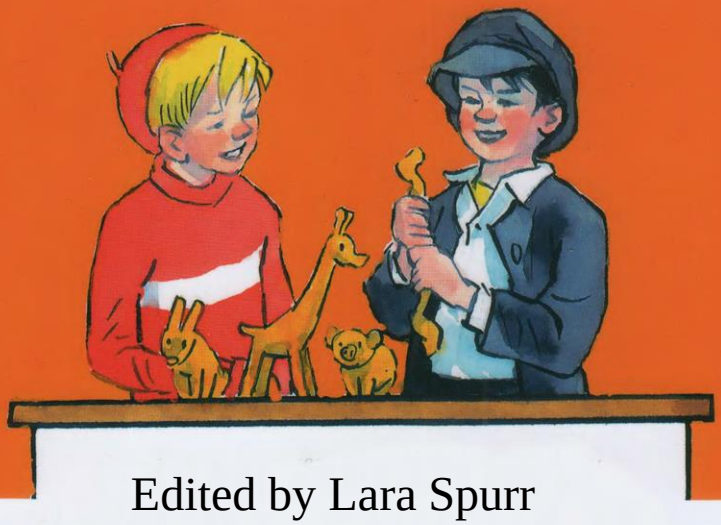

Edited by Lara Spurr
(Durham, England).
Layout by Arvind Gupta (Pune, India), Evgeny Spirin
(Sosnovoborsk, Krasnoyarsk Territory, Russia).

International project:
"Mini Progress and Mini Raduga"